

चट्टानो का जलगीत

भले ही यह तथ्य अजीब लगे लेकिन यह सही है कि प्रत्येक आत्तिकारी कुछ भी होने से पहले प्रेमी होता है ।

—चे ग्वेवारा

चट्टानों का जलगीत

वेणु गोपाल

शीर्षक

शीर्षक प्रकाशन
गढ़ रोड, हापुड-245101

चट्टानो का जलगीत
(कविता संग्रह)

कृति स्वाम्य वेणु गोपाल

प्रथम संस्करण 1980
द्वितीय संस्करण 1981

मूल्य 30 00

प्रकाशक
शीर्षक प्रकाशन
गढ़ रोड, हापुड़ 245101

आवरण सुरेंद्र राजन्
विभाजन पृष्ठ
एक व दो भाऊ समथ
तीन व चार जयंत देशमुख

मुद्रक
शान प्रिंटर्स
गाहदरा दिल्ली 110032

SHIRSHAK PRAKASHAN
CHATTANON KA JALGEET
Poetry by Venu Gopal
First Edition 1980
Second Edition 1981

Rs 30,00

उन आखो के लिए
जो
सपने देखती ह ।

कविता-क्रम

वकन होता हुआ—चेहरा

उड़त हुए/हर हाल म वजोड/भविष्य / मेरे साथ / घर लौटत हुए/
समारम्भ/तैयारी/जवाब देना है/उपजाऊ थकान/जेठ का महीना/
साल की आखिरी रात/यात्री भूमिका मे/मेरा वतमान/फूल (एक)/
फूल (दो)/फूल (तीन) / पत्थरा म गोताखोरी (एक) / पत्थरा म
गोताखोरी (दो)/पत्थरा मे गोताखोरी (तीन)/पत्थरा मे गोताखोरी
(चार) ।

यही ममय है—प्यार !

कविता की ओर/पुकार/मरी परछाई/याद (एक)/याद (दो)/बीच
म समदर/उपाय/सृष्टि का पहला क्षण/मुसीबत की घड़ियो म/जिस्म
ओर सपने/वचाव/एक अर्धरी बातचीत/हासिल कर लेता हू / प्यार
का वक्त/जब हम तुम मिले (एक)/जब हम तुम मिले (दो) / जब
हम तुम मिले (तीन)/जब हम तुम मिले (चार) ।

आइना होते हैं—दोस्त !

तुद अपनी ही प्रतीक्षा म/गोया आइने म चल गये हो ।

मेरे सामने है—वह !

ब्लैकमेलर

[इस संकलन में 'धनकमलर' शामिल की गयी है। यह 1971 के उत्तराध में लिखित तीन जम्ही कवितायां में स एन ह । जगल-गाथा , यह तो युद्ध है और धनकमलर । इन तीना का एष-दूसर का पूरक माना जाय ।]

कविता

कविता गुम्सा है तो भी नफरत है तो भी लगाव है
अपनापा है प्रेम है जिदगी कितनी ज्यादा जिदगी कितनी
ज्यादा अपनी कविता के साथ जमीन थिरकती हुई चट्टानें गाती
हुं जगल भूमता हुआ समस्त उमड़ता हुआ आसमान ताजगी से
पूरपूर फूला व तोतले बोल और ये सब के सब कविता हात हुए
लेकिन कविता तो भाषा म होती है ये सब के सब भाषा म प्रवेश
करते हुए पर कविता भाषा भर तो नहीं होती— ये सब के सब गाने
में और उनक अर्थों म पहुंचते हुए पर कविता गद और अर्थ भर तो
नहीं होती फिर क्या होती है? सपना अर्थ और शब्द म पहन
उनकी जमीन उनकी मा उह जम देने वाली सपना की जमीन ।

और सपन? कविता की जमीन हा, वही प्रेम जो एक लड़ाई
लड़ाई का नतीजा लड़ाई की प्रेरणा लड़ाई का मकसद कविता
वेदतरी के लिए हाती है बदतरी व खिलाफ सपनों के दुश्मनों की
दुश्मन पसीन म लथपथ, मिट्टी सन हाथा म हल की मूठ ही हमशा
क्यों? कभी फूल भी तो और कविता उस भावी फूल म तैल
होती हुई कारखान स लौटते मजदूर के चेहर पर मुर्दानगी ही नहीं
मुस्कान भी ता और कविता उस मुस्कान स एकमेक होती हुई लनिन
न कहा था क्या कहा था लेनिन न? सपन देखने चाहिए लनिन ने
खुद कैसा सपना दिया लेनिन कवि था सपन देखता था वहीलिए
लेनिन था सपन देखना कितनी मुश्किल बला हर कविता का प्रेम
कविता बना देती है प्रेम राजनीतिक हाना है प्रेम कविता राजनीतिक
कविता होती है अब कवि खुद राजनीतिक भर स पाव तक तो

उसका प्रेम कस नहीं ? उसकी कविता कैसे नहीं ? अपन हसन में, रोम में, विलाप में, आलाप में, निराशा में, आशा में किस में नहीं होता वह राजनीतिक ? लेकिन क्या राजनीतिक कविता प्रेम कविता नहीं होती ? जब कवि प्रेमी और इसीलिए राजनीतिक भी तो ? पर एक परिवार भी एक समाज भी एकदम जड़ रक हुए और रोवत हुए नहीं चाहते कि तिनका भी इधर से उधर हो जाये सम्पत्ति-केन्द्रित उसका हर आयाम और परिणाम और समाज ही कवि को प्रेम सिखाते हैं सपन देखना सिखाते हैं और नहीं चाहता कवि टुकड़े टुकड़े होना पर होता है नहीं चाहता वह आसपास का टुकड़े-टुकड़े करके देखना पर देखता है कविता को अपन से अलग करके अपन का पाठक से अलग करके प्रेम को राजनीति में अलग करके और नतीजा ? कवि टूटता चला जाता है सचमुच उनका गुलाम बन जाता है जो उन टुकड़ा-टुकड़ा में काटते ही इसीलिए हैं कि वह गुलाम बना रह वह टुकड़े टुकड़े करने लगता है हर इनाइ को और अलग अलग देगता है इस वाद से उस वाद को हम आन्दोलन में उन आन्दोलन को इस कविता में उस कविता को और वे आका लोग नहीं जानते देते कि निराला की 'सरोज ममति एक आतिवारी कविता भी है कि रामेश्वर की 'टूटी हुई बिखरी हुई एक राजनीतिक कविता भी है कि मुक्तिबोध की 'अधर में' एक प्रेम कविता भी है क्या हर आतिवारी पहले प्रेमी नहीं होता ? क्या वह इसीलिए आतिवारी नहीं होता कि वह प्रेमी होता है ? क्या हर प्रेमी राजनीतिक नहीं होता ? क्या वह इसीलिए प्रेमी नहीं होता कि वह राजनीतिक होता है ? और क्या इसीलिए कवि नहीं होता कि वह आतिवारी होता है प्रेमी होता है राजनीतिक होता है ? क्या क्या नहीं होता कवि ? एक मैं' एक शरीर एक परिवार एक समाज एक दंग एक भाषा और जब कवि अपना सब होना देखता है तो कविता होती है यह सब होने के प्रति प्रेम का इजहार लेकिन यह सब होने में जहर भी इन सब में व्यक्तिगत सम्पत्ति की अवधारणा पर टिकी हुई इमारत में परिवार का एक अदना एजेण्ट परिवार समाज का और आगे भी इसी तरह उस इमारत तक और सब कुछ मस्कृति, सम्पत्ता, काल, दिक् वही इमारत क्या कविता भी एक अदना एजेण्ट नहीं होती उस हृद तक, जिस हृद तक सत्पुष्ट भाषा में सत्पुष्ट अभिव्यक्ति होती है ? क्या उस हृद तक प्रतिश्रियावादी जहर में युभी सरचना नहीं होती जिस हृद तक वह एक अदना एजेण्ट भर होती

है ? अपने सतुष्ट होने में सतुष्ट लड़ती हुई नहीं अपने से अपने होने में बेहतरों के लिए अपनी बेहतरों और आसपास की बेहतरों और लड़ाई में शब्द अपारदर्शी नहीं रह जाते मजदूर, किसान आति जैसे शब्द कवि इन शब्दों के पार देखता हुआ प्रेम कविता सपना तो क्या कविता वैसी ही युद्ध-भाषा नहीं है, जैसी स्वप्न भाषा है ?

क्या वही ही समस्त सद्देश नहीं है, जैसी प्रणय सद्देश है ? बहुत जरूरी है कविता जीने के लिए एक बुनियादी जरूरत रोटी, कपड़ा और मकान की तरह उनके बाद लेकिन उसी कतार में पिछली कतार में हरगिज नहीं रोटी, कपड़ा, मकान और कविता इस तरह लिखी जानी चाहिए बुनियादी जरूरतों की सूची कविता कवि की जिजीविषा भरी पूरी दुनिया में होना और इस होने को बनाए रखने के लिए जीना बहुत बहुत खूबसूरत कविता वही खूबसूरती पर ये क्या ?

यह हिटलर, यह चंगज, यह और कविता एक जहाद इनके खिलाफ यह खिलाफत यह जेहाद अपने आप में खूबसूरत और कविता की खूबसूरती में चार चांद लगाता हुआ यह वक्त क्या उसी खूबसूरती का वक्त नहीं है ? बीसवीं शताब्दी कहने से तो कुछ भी साफ नहीं होता वह तो कलण्डर का वक्त है कैलेण्डर भी घड़ी का वक्त हाता है कविता किसी खास दिन, किसी खास महीने, किसी खास वष की होनी हुई भी उनके परे अपने होने में प्रेम का वक्त है सपना का वक्त है प्रेमी के मुताबिक स्वप्न दर्शी के मुताबिक घटती बढ़ती कविता अतीत में नहीं होती हमेशा वर्तमान में होती है एक हाथ से अतीत की उगली धाम और दूसरे में भविष्य की दोनों को वर्तमान में चलाती हुई काल के परे जाती हुई क्या यह नजारा माक्स न देखा था ? चने देखा था ? जरूर देखा होगा उ होने जो भी कुछ किया कविता के लिए किया क्या आज भी कोई माक्सवादी जो कुछ करता है, कविता के लिए नहीं करता ? सपना के लिए नहीं करता ? उनके लिए लड़ता हुआ सिपाही, कवि होता है, आतिकारी होता है और माक्सवादी होता है । आति और कविता और माक्सवाद किसी किताब में नहीं क्योंकि लड़ाई किसी किताब में नहीं लड़ाई आचरण है माक्सवाद आचरण है कविता आचरण है आति आचरण है और अगर ऐसा नहीं तो कुछ भी नहीं

लड़नी हुई कविता जेहाद करता सपना य अकेले नहीं है करोड़ों आँसू हैं जो भाषा से दूर हैं भाषा में कविता को नहीं पहचानता सपने को नहीं पढ़ सकती पर जो सपने देखती है सपना

वे दुश्मना के खिलाफ जेहाद की लपट उम क्यों-क्यों जाती है व
आएँ व थरोटा आखें एक दिन भापा को जानेंगी भापा म बबिता
को पहचानेंगी प्रेम का देखेंगी सपना स मिनेंगी श्रीर खुशी से
लबालब हा जायेंगी— बि यहा भी हमारी ही जिन्दगी है ।'

28 जुलाई
हैदराबाद

धेनु गोपाल

वक्त होता हुआ—चेहरा

उड़ते हुए

वभी

अपने नवजात पखी की देखता हूँ

वभी आकाश की

उड़ते हुए ।

लेकिन ऋणी मैं फिर भी

जमीन का हूँ

जहाँ

तब भी था—जब पखीहीन था

तब भी रहूँगा जब पक्ष भर जाएंगे ।

5178

हर हाल मे बेजोड

तिनका हूँ—सूखता हुआ । लेकिन
फिर भी

जगल का एव बेजोड हिस्सा । जय
हरा भरा होन म था

तो
सूखन म भी हूँ ।

6 10 75

भविष्य

मजबूत घोडा की तरह
दौड रही हैं
जड़ें

और
सबेरा है
हर तरफ

गोया घने जंगल का बिम्ब
उभर आया हो
आवाग म ।

22 3 80

मेरे साथ

सतह मे मैंने सिर ऊपर उठाया
तो खामोशी किस बदर हस रही है ।

मैं बस के पायदान पर लटक के
यहा से कहा जा रहा हू ?

रबिगकर के सितार को
क्या कुछ और बुलद नहीं हो जाना चाहिए था
लोरी सुनाते वक्त ?

तब
मैं
आकाश का
नीलापन तो नहीं हो जाता

और
स्टेज पर
अधेरा तो नहीं छा जाता
खननायक के आते ही ।

मेरा
घर ही था
जो
रहा
मेरे साथ

तेमे मे ।

4 8 71

घर लौटते हुए

माफ़ी मागती दीवारें बार-बार
फिर भी घर बनानी बिगाडती
मेरे आसपास । मैं
आकाश होने को जमीन हो जाता हूँ
और
गमला की जगहें बदलता हुआ
इतना प्रसन्न-गुनगुनाता हूँ कि दीवारों पर
नया पलस्तर लग जाता है ।

सड़क घर से ज्यादा दूर नहीं है
फिर भी वह
अपने आप में
पूरी सड़क है—चलती हुई, गुजान ।
और
घर है कि रुका हुआ, मुनसान ।
मेरा
सारा का सारा शोर गरावा
उस मुनसान में
सँघ लगाने में
नाकामियाब होता हुआ । हमेशा ।
फिर भी बाज़ नहीं आता
अपनी हरकत से ।

घर मेरे साथ हमेशा रहता है । मैं
चाहे जिस सड़क पर, चाहे जहाँ रहूँ ।
कभी जब से
फुदक घर बाहर आता हुआ तो कभी

पीठ पर ग
बौश्रीच की तरह गुजरता हुआ ।
भटकारने भटकारन तब
फाना पर चीटी की तरह वाट गाता हुआ ।

एक
सनातन डेरा बना रखा है मेरा घर न ।
मर १जूद पर ।
श्रीर मैं
मार मँवडा सडका की रौंदता हुआ
घर का ही ढोया करता हू । दरअसल ।
उममे दूर भागन की कोशिश मे
दुनिया जहान की सँर बराता हुआ उस ।

शाम जगल म होती है तो भी मा की
टाट मुन लेता हू ।
रात होनी है तो पत्नी का बुलावा
हम्बे मामूल ।
श्रीर
मबरे सबेर पिताजी का देवी स्तात्र । श्रीर

जगल घर हा गया हू तो अत्र घर ही लौट रहा हू ।
लौटन म कबिता हो रही ह ।
पट्टुच जाऊगा तो पूरी हो जायेगी । श्रीर
दीवारा को माफी मिल जायगी आखिरकार
घर एक बारगी बन ही तो जायगा
या फिर बिगड जायेगा—हमेशा के लिए ।

4 10 75

समारम्भ

घर नीत्र म है । बीज म पेड होता है ज्या ।
घर भूमिका है । रिश्ता का पूव कथन ।

एक निश्चय है मुगबुगाता हुआ
हाथो के हाथ—घम निभाने की
गुरुप्रात करता हुआ ।

अभी थोडी दर म पसीना टपकने लगगा
तो एक ऐसा आगन बन जायेगा
जिसम फूल ही फूल बिखरे हागे ।

होठो से श्रम गीत भी
बस फूटन ही वाला है और
तब
बनती हुई अंधेरी सीढिया
छत की ओर जात जात
ऐन बीच म
इन्द्रधनुष बन जायेंगी ।

ऐसा इन्द्रधनुष
जो आज से कल क बीच म
पुल घम निभायेगा ।

एक विराट कुनमुनाहट जारी हो चुकी है ।
चारा और । लोग, बस जागने ही वाल हैं ।

तैयारी

मैं

आजकल एक काम कर रहा हूँ
कि खुद को ठीक पीटकर तैयार कर रहा हूँ
क्याकि

अब तक के सफर का हासिल तो यह है
कि जितन भी रास्त थे—सबका
जायजा लिया और जान गया
कि सब एक ही जगह पहुँचाते है
मतलब—समदर तक
तो

अब आगे का सफर
समदर में करना
है
इसलिए
सबसे पहले
यह कर रहा हूँ
कि खुद को तैयार कर रहा हूँ
समदर के लिए
और

इस तरह
खुद को नाब नुमा बनाना
मरी मजदूरी है—कोई शौक नहीं है
पीठ बन्दी हाथ चप्पुओं का काम कर सकें
और आखें
मौका आने पर कुतुबनुमा की भूमिका निभा दें

वि किधर उत्तर किधर दक्षिण

मुझे किस दिशा में जाना है—यह तो
ठीक ठीक नहीं मालूम
लेकिन किस दिशा में जा रहा हूँ
यह तो मालूम कर ही सकता हूँ

मुना है
जि समुद्र में मगर घोर गोक घोर पता नहीं
बौन-बौन जानवर रहते हैं
तो
बचाव की तैयारी जल्द ही है
दसनिग

दाँता का इस कदर मजबूत बना रहा हूँ
जि मीना पड़े तो मगर की पीठ में गड़ जाएँ
घोर पत्रो का इस साथ
जि दाँत की गरदन जकड़ लें
तो उस करिदने माद घा जाएँ
घोर मुना है

जि यहाँ मीना तक पानी ही पानी हाता है
न घाँधी न घाँसजाद
सिप घबसाया
तो

ठेर मारी बवित्तानें सिप रहा हूँ
शि-हे गाऊंगा, गता रहूंगा
घोर हवा में गुजनी हुई मरी घाबाज
मर घबेनपन को
गाम कर देनी
ता

इस तरह
आजकल मैं सिर्फ एक ही काम कर रहा हूँ
कि अपने बच्चे तैयार कर रहा हूँ
समदरी सफर के लिए ।

10 10 71

जवाब देना है

जवाब देना है
किसी एरे गैरे का नहीं
बल्कि मुझे समदर का जवाब देना है ।

जिस घरती के टुकड़े पर गड़ा हूँ हम बचन
उमे ही
दरगाजे की तरह ग्यानवर
भावता हूँ—साहर भी घरती ही है ।

'जमा-बूजी बित्तनी है ?' खुद म पूछना हूँ
घोर गुल्लक फोड़कर
ने सार खनखान दिन निबाल देना हूँ
जो
नदिया न दिय थे । समदर के निग ।

ये
सार के सार दिन
रगिन पारलंगिया की तरह हैं
जिन्हें
घरती के परले पर
प्रोजेक्शन करता हूँ
जो दिगारी देती है

घपनी ही टुकड़ा-टुकड़ा बिम्बदारिया म
बनी पर टुकड़ा-टुकड़ा जिदगी
दिलनी है

बिस्तर म दूर	नीद
आती हुई	
आखा स दूर	पलकें
मुदती हुई	
पावो स दूर	यात्राए
सम्पन्न होती हु	
और हाठा म दूर	उच्चारण
शब्दा से जुडते हुए	

कुल मित्राकर
 एक कटी फटी किताब की
 पचास साठ पन्ना वाली कथा हलचल ।

इसी के सहारे लिखना है
 मुझे अपना जवाब ।
 देना है जिसे समदर को—

और समदर
 बेताब होगा ।
 जरूर इतजार कर रहा होगा ।
 भेग ।

20 5 78

उपजाऊ थकान

थकान अगर उपजाऊ हो
तो तीर का निशान बनाती है
'जिन्दगी इधर है ।'

अभी अभी उसकी पत टूटी है
और दूब ने आँखें खोलकर
भावपर
इस दुनिया को देखा है । मैं
उस अपनी जिन्दगी में शामिल करना चाहता हूँ
इसलिए
कागज क्लम लेकर
तैयार हो गया हूँ ।

एसा जब जब भी होता है
तब तब सुबह हो रही होती है
किसी भी और सुबह से
बिल्कुल अलग ।

दूब
ऐसे में घाईना होती है
जिसमें
मैं
अपन चेहरे को
बकत
होता हुआ पाता हूँ ।

दूब के मिरा पर
एक हरा-बच्च भविष्य

टहरा हुआ है। मर
अवम व सहारे
भिलमिलाता हुआ। माना
ओस की बूद म
सूरज न
अवतार लिया हो।

एम म
दूब व सिर
सूरजवान आवाग हा गम हैं।

यथान
मा निगाहा से दल रही
है यह सब।
प्रम न आश्वस्ति म
मुस्फुराती हुई

कि उसकी सतानें
जि दगी तक
पहुच ही जायेंगी
आखिरकार।

13878

जेठ का महीना

हासिल करनी है मुझे
अपनी ही चमड़ी
और खापी हुई
ताम्बई सच्चाई ।

आज तब
कधो पर
कितन कितने
अजनबी भीमभो को
लाद

लिखता रहा हूँ मैं
हर अघेर पर
सूरज का निमंत्रण पत्र तब

जाकर कहीं आया है
अब
यह जेठ का महीना । बहुत बहुत
गम जोगी से
मिलन । मेरे
बेपद जिम्म का दन
मेरी ही चमड़ी

और
उस पर निखन
खापी हुई ताम्बई सच्चाई ।

22 11 75

साल की आखिरी रात

एक छलांग
लगायी है
उजाले न

अधेरे के पार,
पाव
हया मे—

और
में
अपनी डायरी पर
भक्ता हुआ

उसके
घरती छूने का
इतजार
करता

□

रात के बारह बजन मे
अभी
काफी देर है ।

31 12 71

यात्री-भूमिका में

न सगीत न दिस्तर न खिडकी न आगन
कुछ भी तो दूर नहीं है इस घडी लेकिन
रास्ता है कि बहुत बहुत लम्बा
दीख पडता
पैरो में जुडा और
आगे और
न जाने
कितन तो मोडा कितने तो बढावो कितने
तो जमला और कितने तो मैदानो वाता

और

जिन्दगी को
पूण विराम की खडी पाई की तरह
रख लिया मैंने
खुद के सामने
हमेशा के लिए ।

हालाकि

पहली बार अपने घर में पहुच जाने
और
उसकी बनोरफाम-सी गध को नधुनो में
खूब खूब भरकर
बेहोश होने की भूमिका में । या जिन्दगी की
मेरौथन दौड में
बार-बार पिछडता हुआ भी
मैं
रोक नहीं पाया था
खुद को

वक्त्र व सामन पडवर
अध या अत्र विराम म दत्त जान से ।

वभी निस्म ता
वभी घडकनें तो
वभी दिमाग

सबके सब
रखावट म रपातरित हुए हैं और
तब चीजें और और पास आयी हैं—
 आती चली गयी हैं
 पीठ पर सद गयी हैं—

इस तरह
कि मन्त्र मुक्त नहीं हा सबता अब । लाख चाह ।
 मरा

रोशनी या अधेर म हाना
प्रकाश व्यवस्थापक की मेहरबानी पर
 मुनस्सिर ह

तो
सम्बाद
में रट हुए बोलता हूँ—और वे भी
 प्राम्प्टर के सहारे ।

जि दगी बितान के इस अभिनय म
 कई मौके ऐसे आए हैं
कि किनारे व पेडा ने तालिया बजाके
 बस मोर कहा है और

में फूलकर बुप्पा हुआ हूँ और
किसी खास सम्बाद या अभिनय
को दुगुनी मार्मिकता से दुहराया है ।

कमरा हूँ और उसम सबडा हजारो मील
लम्बा रास्ता है जो अगली या पिछली या

या बायी दीवार तक पहुँचकर
मजिल का एक अतिथथाथवादी शैली से
चित्र बनाता हुआ
खत्म होता है और

में हूँ । यात्री भूमिका का
सफलतापूर्वक निर्वाह करता । अपनी
कुर्सों या चीकी से चिपका ।

और सगीत और बिस्तर और खिडकी
और आगन की दूरी
मापता और मापता और मापता हुआ ।

9 11 75

मेरा वर्तमान

मैं फूल नहीं हो गया । यगीचा म
घिरे रहन के वायजूद । उनकी

हकीकत जान लेन के बाद

यह

मुमकिन भी नहीं था । या

अनगिन फूल हैं यहां । लेकिन

मुस्फुराता हुआ कोई नहीं । गीमों

निपोरते हुए और

मूरज के साथ बन गय

अपन सहज रिदता को

मुनाते हुए ।

आसान है

देहलीज से आंगन तब गीड लगाते

घरेलू ठहाका को देखना । छूना । लेकिन

मैं किसी बतार म हू । रागन की

या बस की या ऐसी ही कोई और ।

सदियों से । पसीने की

नदी म बाढ आयी हुई है । और

कविताए

असहाय बही जा रही है । मैं

किनार पर खडा

सिर्फ यह सोच रहा हू कि आज तो

चीनी लेकर ही जाऊंगा । यह

कोई सक्ल्प नहीं

एक चील है। और
यह चील एक साँचा है
जिसमें
मेरा वतमान ढल रहा है।

1 8 74

फूल (एक)

फूल
इतजार करता है
एक अदद हाथ का
मच प आन के बाद

लेकिन
अक्सर
परदा
उठन से
पहले ही

पसीने और मिट्टी में
सथपथ होकर
हाथ

सब कुछ मूल चुना
होता है
फूल के बावत ।

23 5 79

फूल (दो)

दोपहर में
लोग
बड़ा सा पेड़
दूबत ह
और
फूल
निपट अकला हो जाता है ।

छाह की बुनावट में
फूल की
कोई भूमिका नहीं होती ।

फूल (तीन)

जडा को पटुपती हुई
एग आग होती है
और फूल होता है

सूरज को देखता हुआ

और सूरज हाता है
फूल को देखता हुआ

और दोपहर हाती है
इसलिए सारे रिश्त
चरमरान लगत हैं

शाम होने मे कई कई
सदियाँ बाकी होती हैं

फिर भी
फूल
इतजार करता है
उसका

तब तक
इतजार
करता रहता है

जब तक
वह फूल

फूल रहता है ।

23 5 79

पत्थरो में गोताघोरी (एक)

पत्थरा में बही बहुत गहर
गोनागारी करता हुआ

बह

मिट्टी टोहता है।

लहलुहान
उगलिया स
एषाघ भी जड छू सता है
तो
उसकी भाखें
हरी बापला की तरह
भूमने लगती है।

पत्थरा की सतह पर
धूप है
तपती हुई बेजमीनी है।

18 5 80

पत्थरो में गोताघोरी (तीन)

पत्थरा ने भीतर
गोताघार पाता है

कि मगीत के बावजूद
कि रिदना के बावजूद
कि वक्त के बावजूद

वह
अकेला है

और
उसके
अकेलेपन को
भी

पत्थरा म
गुमारा जा रहा है।

18 5 80

पत्यरो मे गोताखोरी (चार)

एक अदद पूम
पत्यरा के किताने
रखता हुआ वह

प्रापना करता है

रूता है
पत्यरा की मरह
हाथ मे
फिर माथे मे

घोर
समुद्र म लेटा
उसका इतजार
करता ईश्वर
मुह बाप
अचम्भा करता है

गोताखोर
पत्यरा म
उतर जाता है

पूव
बस ही
पढा रहता है
वह साक्षी है ।

यही समय है—प्यार ।

—पान्लो नेरुदा

कविता की ओर

कविता इतजार कर रही है ।

हमारी चाटर-बोतल में
चायटी में भीठे, ताजे, साफ पानी मा
यकन है । निम

हम जग पह्लाइ में मांगकर साथ हैं
जो
हमारी
इकलौगी तट गोभा है ।

हम
चाटर-बोतल में एक घूट भरते हैं
धीर
भपन भपने जिस्मा की
एक-दूगरे की आला से दलते हैं ।
फुगफुसात हैं—'कविता
इन्तजार कर गपती है ।'

रात दोपहर में विलय हो रही है
जिस्म
हमारे भीतर
गुगह की लाली हो रहे हैं ।

हम
तेज-तेज चलने लगत हैं

जिग प्पार
भविता हमार प्रतजार कर रही है।

20 5 75

पुवार

तुम कहाँ हो ? — मैं

मान
ठीक तुम्हारी ही तरह
बदर फेंके थे । तेवना

तालाब था
जि गामास ही रहा । नीले
प्राणमान की तरह उसका पानी ।
एकलम सहर हीन ।

इस बचन गाम है । गूबगूरती की भिगात
ही जैम । और
तुम नहीं हो । मेरी

बकिताए अत्र भी तुम्हार लिए
जगह छोडपर चलती हैं ।

25 11 72

मेरी परछाई

ठीक हाथा म मेरे

मैं

कि जैसे वो पहाड, धो बान्स, वो पड,

सवेरा भी
मेरे हाथो मे,

भाक्ता हू,
कि देवता हू

तुम

कि जैसे मेरा शरीर, मरा समय, मेरा मसार

और
उनके पीछे
उनकी परछाई की जगह
मेरी परछाई ।

ठीक हाथा म मेरे

मेरे साथ
मेरे पीछे पीछे
चलती हुई ।

24 4 80

याद (एक)

तपती और तपाती दोपहर म

एक साफ, ठण्डे पानी से भरा हुआ सोटा,

उमस भरी राता मे बहुत-बहुत भटक लेने के बाद

अपनी पसन्द की ब्राण्ड वाली पौर्न सिगरेट

बिस्वी अज्ञान दाहर के बिस्वी मोठ प

अचानक दीग जाने वाला कोई लगोटिया दोस्त चेहरा

मेमी ही कुछ होनी है तुम्हारी याद । और

उमसा बज्रूद महसूस करता हूँ मैं

अपनी ही बेबजह मुस्बाना म ।

12 5 75

याद (दो)

आप

जेल की कोठरी में
आसमान देखते हैं
हरा पौधा देखते हैं
उजाला देखते हैं
और

बेकाबू होत

अपने आपे को
भरसक काबू करते हुए
नजरें फेर लेते हैं। मैं ठीक

इसी तरह

उसकी याद करता हू
और फिर नहीं करत
की कोशिश में
और और करता हू। करता ही
चला जाता हू।

12 5 75

बीच में समुद्र

गाम का इस नदर दूर दौरा है
कि मुचह भी
गाम का दौर
मेर
आसमान मे
नही आती ।

गाम

जय
में अपने ही जिस्म म
दुख्य जाता हू
और
रग बदलने
रगारग आसमान को देखता हू ।

बीच म समुद्र होता है ।

और
उसकी पछाड खाती लहरो मे
सुम्हारी
सुहार ।

में सुनकर भी नही सुनता ।

समदर क उस पार
तुम होती हो
और सुबह होती है ।

15 5 75

उपाय

अंधेरे के खिलाफ होता हूँ मैं जब
मेरे पास एक ही उपाय होता है
तब
अचूक

घोर
वह

तुम हो ।

तुम्हें मैं रोशनी की तरह इस्तमात कर लेता हूँ ।

घोर
जब कभी
रोशनी की दुनिया
खिलाफ हो जाती है
मेरे

~ तो
मैं
तुरन्त
तुम्हारे जिस्म से
अपने जिस्म को
एकमक करते हुए

एक
निजी अघकार
रच लेता हू
आसपास ।

23 5 75

सृष्टि का पहला क्षण

मैं दीवार को छुआ—वह दीवार ही रही । मीका
देगबर हिपाजत करती या खायट बनती ।
मैंने पट को छुआ—उह पेड ही रहा । एब दिन
ठूठ बा तान की प्रत्रिया म हरा भग सहनहाता ।
मैंने आवाग को दता—वह आवाग ही रहा । एब
समन म न धान वाता पहली विस्तार ।
मैंने समदर को दता—वह समदर ही रहा । पहली ही
तडर म धाने घोर डूब जाने वा निमगण देता ।

मैंने तुम्हें देगा घोर छुआ—घोर तुमा मुभ

घोर सृष्टि का पहला क्षण
दुबारा आवाग लन लगा
हम कुछ घोर ही जयादा
मैं' घोर 'तुम' बनता हुमा ।

12 5 75

मुसीबत की घड़ियों में

तुमने
मेरे बावजूद
मुझे प्यार किया है
1975 के बावजूद
किया है मुझे उम्मीदा से लबरेज ।

अमानवीयता के बेनबॉस पर
मानवीय ख़बसूरती का दाहकार रही हो—

इस घनघोर अंधेर में भी
मेरी यात्रा दिशाओं की ढूँढ देने वाली
कितना कितना शुभगुज़ार हूँ मैं ।

कि ऐसे कविता अतक समय में भी
तुमने
मेरी कविताओं की दुनिया को भुमकिन
बनाये रखा है ।

जब भी कभी
नहीं होगा कोई वप
1975 जसा

तो किस कदर याद आयगा मुझे
मुसीबत की घड़ियाँ में किया गया
तुम्हारा यह प्यार ।

14 11 75

जिस्म और सपने

तुम्हीं बताओ—
कहा दूँ जगह ?
आड कहा मिलेगी ?

घर मक्बरा बन चुका है ।
पत्थर की मुर्दा आस्ता के पीछे
तानाशाही नजर चीकनी है
चौबीसा घण्टे ।

पाकों में परेड हो रही है । नदी किनारों पर
चादमारी । ताजमहल को
'ए-क्रोचमण्ट हटाओ अभियान के तहत
तोड दिय जाने का प्रस्ताव
विचाराधीन है ।

तुम्हीं बताओ—
कहा है कोई जगह
हमारे सपनों के अलावा ?

कहा है कोई आड
हमारे जिस्मों के अलावा ?

2 12 75

बचाव

रमा—

बि बिगे घूम पायेंगे हम
हमारे हाठ पट चुक ? ।

चाकू

उसी के हाथ में है
जिसके मुह खून लगा है ।

भुवो—

जरूरी है बि हम अपनी
परछाइया के साथ गड्मड हो जायें

अगना धार

पता नहीं क्या

और पता नहीं कहा हागा ?

4 12 75

एक अघेरी बातचीत

चादनी स लबालब
ग्राममान

वे
साथ
जमीन

वे
साथ
हम
और हमारी नजदीकी

और
फिर भी
प्यार की जगह
सिफ एक अघेरी बातचीत—हमारे बीच—

‘कब खत्म होगा यह कराल काल ?’
‘अगले साल—किसी न किसी साल तो ।’

30 12 75

हासिल कर लेता हू

आप भीतर पहुँचते हैं और पाते हैं कि यह कमरा
तो आपका नहीं है।
आप हड़बड़ा कर बाहर आते हैं और पाते हैं
कि यह आगन भी आपका नहीं है।
और फिर मौहल्ला, शहर, मुल्क और दुनिया
कुछ भी आपका नहीं रहता।

तो आप क्या करते हैं ? मैं तो उमे
अपनी बाहो मे भर लेता हू और
इतजार करते हाँठो को
अपने होठ सोंप देता हू
और—
फिर से हासिल कर लेता हू—

अपने को और अपनी दुनिया को ।

12 5 75

प्यार का वक्त

वह

या तो बीच का वक्त होता है
या पहले का । जब भी
लड़ाई के दौरान
सास लेने का मौका मिल जाय ।
उस वक्त

जब

मैं

तुम्हारी बंद पलकों धेतहासा चूम रहा था और
हमारी
दिन भर की लड़ाई की थकान
खुशी की सिहरना म तब्दील हो रही थी । और
हमारे हाथ
एक-दूसरे के अंग पर फिरने के बहाने
एक-दूसरे की पोशीदा चोटों को सहला रह थे ।
उस वक्त

बही, कोई नहीं था । न बाहर, न भीतर । न
दिल में, न दिमाग में । न दोस्त, न दुश्मन । सिर्फ

हमारे जिस्म । ठोस, समूचे और जिंदा जिस्म ।
सापों के जोड़े की तरह
सहारा लहरा कर निपटते हुए । अंधेरे से
फूटती हुई
एक रोगिनी
जो हर सहाराने को

जब हम तुम मिले (एक)

तैराक को
बहुत—
बहुत दिना के बाद—
कोई लहर-वती नदी
या दपण-पानी वाला गहरा तालाब
मिले

और वह
पहले तो मुग्ध लुब्ध देखे तो देखता ही रहे
और धीरे धीरे बपड़े उतारे—धीरे धीरे पानी में उतारे—
और आँखें मूढ़
महसूस करे—पानी का सुहाता पानीपन और
नस-नस का परिचित खुलना—

और
जब आँखें खोले ता मुल को साकार देखे—
और देखे—दूर और दूर होता किनारा—

और बहुत

बहुत थक चुकने के बाद ही
अजनबी हो चुके अपने शरीर से
पुनः पहचान करे—और उसे साथ लिए लिए
किनारे की ओर लौटे—बुछ इस तरह !

जब हम तुम मिले (तीन)

जब हम-तुम मिलते हैं
तो ऐसा लगता है कि 'बहा जाना है' भूल

हम
बीच में ही
किसी अजनबी स्टेशन पर उतर पड़े हैं। और
हमें वहा तक लाने वाली गाड़ी
जा चुकी है

हमारा मिलना
अक्सर ही या बीतता है
कि या तो पटरियाँ को घूरते रहो
और उन्ही के सहारे क्षितिज को—
या पटरियों की ओर न देखने में मुग्धिता रहो
और इसलिए क्षितिज को भी नहीं—

और पटरियों और क्षितिज के बीच
वह
अजनबी स्टेशन
हमशा ही अजनबी बना रहता है। हमारे लिए।

जबकि
उतरते हम
उसी जाने पहचाने स्टेशन पर हैं
हर बार।—जब भी हम तुम मिलते हैं।

3 4 77

जब हम तुम मिले (दो)

जब हम तुम मिले
तो बातें बढ़त थी—जो हमने नहीं की—न करेंगे—
वाम भी
एक दूसरे को एक दूसरे से
बर्झ थे—जो हमेशा ही रहत हैं—
और जो हमेशा ही नहीं किये जाते ।

वामा और वाता के पर हम
एक माध्यम में ढलकर रह गये थे—
कि हमारे जरिए एक खामोश संगीत
बजन लगा था—और हम देखते न देखत
आकाश के सुलेपन के माता पिता थे

उसके बाद
हमारी गोदी में
खेलता बच्चा ही सहारा था—हमारे त्रिण—
एक दूसरे के पास पहुँचने
और एक दूसरे को पान का ।

3 4 77

जब हम तुम मिले (तीन)

जब हम-तुम मिलते हैं
तो ऐसा लगता है कि 'बहा जाना है' भूल

हम
बीच में ही
बिन्सी अजनबी स्टेशन पर उतर पड़े हैं। और
हमें वहाँ तक लाने वाली गाड़ी
जा चुकी है

हमारा मिलना
अक्सर ही या बीतता है
कि या तो पटरियाँ को घूरते रहो
और उन्हीं के सहार क्षितिज को—
या पटरियों की ओर न देखने में मुग्धिता रहो
और इसलिए क्षितिज को भी नहीं—

और पटरियों और क्षितिज के बीच
यह
अजनबी स्टेशन
हमेशा ही अजनबी बना रहता है। हमारे लिए।

जबकि
उतरते हम
उसी जाने पहचाने स्टेशन पर हैं
हर बार।—जब भी हम-तुम मिलते हैं।

3 4 77

जब हम तुम मिले (चार)

हमारा मिलना
क्या कोई जादू है ?

कि दीवारें वे ही और बंसी ही
रहती है—खाइया भी बीच में
वे ही और बंसी ही ।—और

फिर भी हम-तुम मिलते है
तो नहीं सोचते कतई
कि दीवारा और खाइयो
के बावजूद कैसे मिल लिए ? समदर

ज़र खरीद गुलाम-सा
पैरा को घोने लगता है । सूरज
इशारो पर
उगता है—डूबता है । हम
एक-दूसरे के
और इस तरह पूरी दुनिया के
आत्मपनाह की भूमिका में
बन को
एक लम्बे घूट में गटक जाते हैं—लेकिन

फिर
धोबी ही देर बाद
बच रहते हैं—

खाइयो और दीवारों के पार
रोते सिसकते भीकते—दो अदना जीव ।

तो वह क्या सब जादू होता है
जो हम तुम मिलते हैं ?

3 4 77

आईना होते हैं-दोस्त

खुद अपनी ही प्रतीक्षा में

एक

अधेरे में आईना और तुम

कमरे में तुम हो और आईना है ।
तुम भी आदमकद हो और आईना भी ।
कमरे में अधेरा है और तुम दोनों अधेरे में हा ।
फिर भी तुम उसके सामने खड़े हो क्याकि उजाला
तुम्हारा जातीय अनुमान है ।
तुम आईने का टटोलत हो, सहलाते हो और
इस तरह उसके ठण्डे चिकनेपन को उगलियो
के पोरो पर झेलकर भविष्य को भरसे
के काबिल बनाते हो ।
अधेरे को बदाश्त करने की कोशिश में खुद
को उसमें घुलात हो लेकिन बार बार
पूछत भी हो—'रात कितनी बाकी है ?'

क्या रात की तरह खड़े रहोगे ?
सुबह तक ?
अगर सुबह नहीं हुई तो ?
तुम्हारी सुबह ?
तुम्हारे कमरे में ?
तुम्हारे कमरे की सुबह नहीं हुई तो ?

दो

मौत के वान नहीं होते

अधरा है

और तुम्हारे हाथ म कलम है

तुम उस भाईने की जगह

इस्तमाल करते हुए

हवाभा पर

खुद को

सपन की तरह लिखते हो ।

और

कविताएँ लगातार वहा बरसती हैं

जहा

वभी तुम

अपन बचपन के उजले समारोह थे

और

जिसके बीतते न बीतते

तुम

अपन म

नमक की तरह यो धुल गये थे

कि चिडिया

कि नदी

कि पहाड ऐसे बहान हैं

जो

दरअसल तुम्हारी गुहार है

कमरे के

अधरे खोना से

टकरा टकरा कर सौटती हुई ।

जबकि

अकेलापन मौत नहीं होता ।

हो

तो भी

मौत के बान नहीं होते ।

तीन

बदी समुद्र के बदी तुम

समुद्र हमेशा एक घेरे म होता है ।

तुम कहते हो

'बिचारा समुद्र बदी है ।

अपने कमरे का समुद्र

हरेक का केन्द्र होता है ।

लोग

उसे देखकर

चिडियाघर मे देखे

खूषार शेर की याद करत हैं ।

कोई भी

अपने कमरे मे

समुद्र की बदी देखना

नही चाहता ।

न तुम चाहते हो ।

लेबिन

यह

तुम्हारे कमरे म है

इसलिए

कमरे का बदी है ।

लेबिन

यह

तुम्हारे घोर दुनिया के बीच म है

इसलिए

तुम उमने बग्गी हो ।

बन्दी की इच्छाएँ
और
उसके खयाल
यहाँ तक
कि वह खुद भी
एक छलाग होता है
—टवाबो के ऐन बीच में ।

हर बन्दी
एक मुजस्सिम टवाब होता है
आस्रिकार ।

चार

शर्तों का गणित

तुम्हारी शर्त तुम्हारा कमरा है
तुम्हारे कमरे की शर्त
वह अंधेरा है
जो
उसी की शीलाद है
तुम्हारा कहना यह है
कि दुनिया
तुम्हारी शर्तों पर ही
तुमसे मिल सकती है ।

तुम
यह भूल जाने हो
कि दोस्त
तुम्हारे कमरे में नहीं जनमन ।

दुनिया में होत हैं
घोर
यही मे
तुम्हारे कमरे में घाते हैं
घोर
ये शर्तें गत नहीं मानत ।

दुनिया की अपनी शर्तें होती हैं ।
जिसे तब
तुम्हारा कमरा मुमकिन होता है ।

तुम
अपने कमरे में हो
फिर भी दुनिया में हो ।

गतों के इस गणित ने
तुम्हारे होने को
तुम्हारी ही नज़र में
संदिग्ध बना दिया है ।

पाँच

सुरक्षा के करतब

कमरा

तुम्हारे लिए

एक सम्पूर्ण सुरक्षा है।

सदा सुरक्षित रहने की चिंता

तुम्हें असुरक्षित करती है।

तुम

अपने से बाहर रहने की अभिशप्त हो

बगोबि तुम

सदा सदा

अपने कमरे में भीतर रहना चाहते हो।

कमरे में बैठे आदमी के लिए

सब बराबर है

पावरिंग साठीपाज हो या अोरतो की भावाजाही

या फिर

तुद का दफतर आना-जाना और घर घर धो जाना

उजर

सिफ अपने पर रहती है

और

इस पर

कि अपना ही हुकम बराबर माता

'जागो, उठो, सो जाओ, जाओ आ

बिना निमी हीन के सब

सुरक्षा की चिंता
भादमी को कची घना दर्ती है
और

वह उस आकाश के लिए
खतरा हो जाता है
जिसे
जिन्दगी और दोस्त मुहैया करते हैं

कमरे में समदर होता है,
फिर भी
आकाश
जब तब
सितारों से

तुम्हें
छू लिया करता है।

छह

सुद अपनी ही प्रतीक्षा में

अभी तो तुमने

अपने को

टास के लिए उछाला है—

अभी तो

हवा में हो

जब

जमीन पर गिरींगे

तो

पता चलेगा

कि कविता की जीत हुई है

या तुम्हारी ?

तभी

तुम

बयादा तुम हो पाओगे—

बयादा फूल, बयादा फसल बयादा नदी

बयादा पत्त—

अभी तो

एक प्रतीक्षा ही

सुद अपनी ही

जो तुम कर रहे हो—

छड़े में अपने कमरे में घाँसे के मामने,

हाथ में कलम लिए—

12 | 79

गोया आईने मे चले गये हो

जहा

तुम खडे हो

इस वकत

जहा

तुम चलते थे

कभी

वहा

अब भी एक रास्ता है

तुम्हारे

पैरो के इद गिद

उग आये

सस्मरणा के नीचे ।

एकमात्र नियत रास्ता ।

तुम्हारे लिए । ।

सस्मरण

पीले पड गये हैं

भर रहे हैं

धूल मे ।

और

तुम्हें भरोसा है

कि वे फिर उगेंगे

फिर फिर उगेंगे

घोर
इसलिए
तुम
उनकी जडा म
मटठे की जगह
अद्वितीय ऊर्जा सींचते हो

देखो तो सही
अपन को—

अतीत घोर भविष्य
के
दो पाटो के बीच

टूटते फटते पिसते
हुए भी
नहीं सोच पा रहे हो

कि
नदी
किनारा के बावजूद
अ
के
ली
होती है ।

तुम
अब
नहीं डूब पाओगे
बभी

अपनी भूतपूर्व शाम । बच्चो
के
चेहरो
पर

तो
सुबह हो रही है ।

और
वे

तुम्हारे

पितृत्व के धुधलके म भी
खुली तलवारो-से चमचमा रहे हैं ।

उन

बच्चों का

बच्चे होना भर

तुम्हारे

गुम

हो चुके

रास्ते को

रास्ता साबित करेगा ।

फूली का फूलपन

बभी

दीवार नहीं था ।

तुम्हारी उगलिया के लिए ।

और फिर—

बच्चों की तत्परता तो देखो

कि

वे

तुम्हारे

सस्मरणा को

एक छलाग में

पार कर जाना चाहते हैं ।

कितने असंग हो गये हो तुम !

अपनी

लरजती

घनघोर देह के प्रति
लापरवाह
गोया आईने में चले गये हो
हमेशा के लिए ।

फँसलो का वक्त आ गया है—

और
अगर
अब भी
अपने सपनों को
शब्दों में
बदलत रहोगे

तो
पाओगे
एक दिन
कि
तुम्हारी स्वप्नहीन आख
पतझर में गिरे पत्ता की तरह
हवा के साथ उड़ रही हैं—

तब तो
और भी
नहीं देख पाओगे

कि
तुम्हारे कंधों पर
सिं-दबाद की कथा वाला
सैतान नहीं

बल्कि तुम खुद हो
अपन बेटे में
खिलखिलाते हुए ।

पावों में

पत्नी नहीं
बल्कि तुम्हारे ही दिमाग की
वह
पत्नी नस
लिपटी है

जिसे
तुमने कभी
वतौर सुरग इस्तेमाल किया था
और
आस्थाओं के
अशुमान लक्ष्यो का
छून लगे थे

फिर क्या हुआ था ?
मैं नहीं
तुम्हारा
निरपराध रक्त प्रवाह
प्रश्न करता है

कि सारे के सार
विधवा का तहस नहस कर बड़े
और
अपना ही
रास्ता रोक
अलमस्त साड व मारिद खडे हो गये ।

तुम
जो
सगीत थे
इसीलिए विद्रोह थे
और
इसीलिए
हर उस आदत के खिलाफ थे
जो चुप रहना सिखाती है ।

फिर क्या हुआ था ?

मैं नहीं

तुम्हारा उत्तर धर्मी

प्रश्न सत्कार पूछता है

वि लालची आवेगों के

कमीन फुसलावे में आकर

एक

ऐस

तारीख-बाहर

सिक्के में ढल गये

जिसके

एक ओर

मृत्यु मौन अंकित है

तो

दूसरी ओर

जीवन हीन शोर शराबा ।

तुम

एक जरिया हाकर रह गये हो

निजी विस्फोटों की

मनमानी आपाधापी के लिए ।

नतीजे में

तुम्हारे पैरों के एक नीचे की जमीन

ऊँची उठती चली गयी है

मीनार बन गयी है

ओर

तुम

देखने लगे हो

गुदर

नीचे

सभी ओछे

सभी टुच्चे
सब के सब नमन-हराम

दिलायी देते
हर चलायमान धब्बे म
आदमी नहीं—उस ।
जो
कभी आदमी नहीं होता
तुम्हारे लिए
घर मधान का
एक टारगेट होता है ।

तुम्हारी
एक्स किरण निगाहें
तुम्हारे

भ्रकेलेपन को
बेघबर भी
तुम्हें
देखती रहती हैं
लगातार
फिर भी
नमन-हलाली म
कुछ नहीं कहती

उन
खाइया के वारे मे
जो
तुम्हारे
शब्दों से सरककर
चुपके से
वहा बिछ गयी हैं
जहा
तुम
अपने का
समारम्भ करना चाहते थे ।

देहलीज को
सैकड़ो हजारो बार
लाघकर भी
तुम

लाट गये
आखिरकार
उसी घर में । जहा की
दीवारा म
तुमने
कभी
अपनी
ह
डि
या
चुनवायी थी ।

एक साथ
अपन को छोडकर
सब कुछ होते हुए
तुम
उस
देवदूत की तरह
लगत हो
जो
अब
घरेलू हो गया है ।

अपनी तकलीफा को बजाता हुआ
फडफडाता हुआ

नही देख पाता
कि सार के सारे लोग
—तुम्हारे अपन लोग

वहा चले गये हैं
जहा तक
धभी
तुम्हारी पतंग पहुची थी
उटते हुए

और कट गयी थी ।

अपन को देखो—

तुम्ह तो
अब तक
वहा होना चाहिए । या
जहा
नीब पड रही है—

आईने से बाहर आओगे
तो पाओगे

कि तुम किसी भी उपमा रूपक से
वही ज्यादा कविता हो ।

20 9 78

मेरे सामने है वह !

1

एक-मेजर

(एक)

वह मेरे सामने है। इसी वक्त भी। हालांकि बहुत पानी
बह चुका है। नदियों में। उस बात के बाद।

जब

मेरे भीतर मेरे प्रीतित हिन्दुस्तानी
होन न जोर मारा था।

मैंन अपने ही घर की छत को नवारा था। एक
सपानी घावाग को स्वीकारा था। कमरे की
विद्यविद्या बंद करके खुद को
मनातन कैंची धोपित किया था। मा व यूटे
जिस्म की तुनना भारत माता मे की थी और
दोनो को रद्द कर लिया था।

और

तभी मुझे वह
पहली बार दिवा था—

सूटिया पर बपहो की तरह टगा। ठंडे चूल्हे मे
गाल की तरह बिखरा। मा की पलका को
बेचान बनाता। पिना के हाठा पर एक गिलगिली
अन्यथापुत्र पैदा करता। पत्नी
की स्वीकृति म मृत्पानगी भरता।

एक दुःखी था। मरी

मरी मरी दुःखी था पर उगनी रख रहा था। इसारा
का था मा का था, जहां मैंने
ममलीममलीममली के गीत प्रेस वाले गुटके पर

(दो)

वह

पूरता, ठहाके लगाता, गरजता और कहता
'जवाब दो। आखिरी जवाब !'

मैं चुप से भी ज्यादा जवाबहीन हू। लेकिन
मेरे सन चेहरे के पीछे सोच का
एक समदर खलबला रहा है। मथत हो रहा है। मेरा
अतीत सुमर पवत है तो वासुकि
मेरी चिंतन गक्ति। दोनों सिरो पर
मैं ही हू। जो
रत्न निकलता है वह एक पुरप
होता है। पेरी मेसन ! उसकी
धीर गम्भीर बाणी
किसी भी ब्लैक मेलर से निबटने के
तीन उपाय बतलाती है। किस
पर अमल करू ?

पहला ?

उसकी माग पूरी कर देना ?
हरगिज नहीं। मुझसे कविता के छूटने का मतलब
होगा नदी से उसके बहाव का छूट जाना, दूब से
हरेपन का नास्ता टूट जाना। मेरे
शरीर के तापमान का जीरो डिग्री तक
उतर जाना। नजरो की समूची हदा मे
मौत ही मौत का पसर जाना।

फिर ?

दूसरा ?

कापका का उपवास रख छोडा था या याद
दिला रहा था उस दिन की, जिस दिन मैंने
छोट भाई की बपगाठ पर डेलकारनेगी की किताबें
दी थी और इस तरह उसका ध्यान सासारिक
सफलताओं की ओर मोडा था । और

तभी स

वह वभी भी मेरे सामने आकर

खडा हो जाता है । मुस्कुराता । खासकर तब

जब

मैं कविता के साथ होता हू ।—लिख रहा

होता हू तो निब या पेंसिल की नोक बन जाता है । सुना रहा

होता हू तो श्रोता और अगर सिफ सोच रहा

होता हू तो

कनपटियो की नसों में तब्दील हो जाता है ।

(दो)

वह

धूरता, ठहाके लगाना, गरजता और कहता
'जवाब दो। आखिरी जवाब।

मैं चुप स भी ज्यादा जवाबहीन हू। लेकिन
मेरे सन बेहर के पीछे सोच का
एक समदर खलबला रहा है। मचन हो रहा है। मेरा
अतीत सुमर पवत है तो वासुकि
मेरी चिंतन शक्ति। दोनो सिरो पर
मैं ही हू। जो
रत्न निबन्ता है, वह एक पुष्प
होता है। पेरी मेसन। उसकी
धीर गम्भीर वाणी
किसी भी ब्रह्म मेलर से निबटने के
तीन उपाय बतलाती है। किस
पर अमल कर ?

पहला ?

उसकी माग पूरी कर देना ?
हरगिज नहीं। मुझसे कविता के छूटने का मतलब
होगा नदी से उसके बहाव का छूट जाना, दूब से
हरेपन का नाता टूट जाना। मेरे
शरीर के तापमान का जीरो डिग्री तक
उतर जाना। नज़रो की समूची हृदा म
मौत ही मौत का पसर जाना।

फिर ?

दूसरा ?

कोई फायदा नहीं। कि एसी
कोई पुलिस नहीं है इस दुनिया में
जो उमे पकड़ सके और

सजा दे सके।

तो फिर ?

तीसरा ?

ठीक है। वही मुझे जचता है। न रह बास और
न बजे बासुरी। मरी
आलें लाल होने लगती हैं। दिमाग
भनभनाने लगता है। योजना
नान लगता हूँ कि क्या ? और क्या ?

और

तभी वह एक आवाज फाड़ूँ ठहाके के साथ
प्रकट हो जाता है। उसकी
आवाज में एक पशेवर दूर चमक बौधती है।

— नहीं। तुम मेरी हत्या नहीं कर सकते। देखो।
मेरी ओर देखो। मैं वीन हूँ।'

और

तब मैं उसे एक बार फिर पहचानता हूँ। और
एक अतल गहराई में गिरन लगता हूँ। जिसमें
के ठण्डेपन की सहने की
एक नाकामियाब कोशिश में
मुन्तिला हो जाता हूँ। और

मेरे ललाट से चूते पसीने की धारों में से
उसकी आवाज उभरती है—

तुम मुझसे बच नहीं सकते। आज
नहीं तो कल—तुम्हें जवाब देना ही पड़ेगा। फंसला
करना ही पड़ेगा। कल—'

मैं कुछ कहने की कोशिश में
बुदबुदाता हू लेकिन दरअसल चीखता हू।

और उसके जा चुकने पर भी मैं
चीखता ही रहता हू

थल—थल—थल ।

(तीन)

डर !

मेरे लिए कोई आवेग या भावना नहीं है बल्कि अलादीन का चिराग है, जिसे छूने भर की देर है और वह हाजिर हो जाता है। निमित्त याद होती है। हमेशा। जैसे

म कमरे म हू। और याद आता है कि पहली बार वह मुझे खूटी पर या चूल्ह पर दिला था। इंसानी फितरत के तहत नज़रें उस ओर उठ जाती हैं और मैं पाता हू कि वह वहा है मुस्कुराता। मुझ पर कोई घटिया फट्टी कसता। मैं एकदम बेचारा होता हू कि वह एक बडिया

ब्लैक मेलर भी तो है। म जब जब पूरी कोशिश के साथ उसे याद नहीं करना चाहता, तब तब वह मेरे आका' कहता हुआ जिन की तरह हाजिर हो जाता है। अलादीन भी क्या मेरी ही तरह था ? चिराग का गुलाम !

(चार)

तुम !

वकिता के नाम पर सुरक्षा-खाई

खोदने वाले

रागन-तल के सवाल पर तो बीबी के सामने
घिग्घी बध जाती है

लेकिन जब देखो तब

बगूवा वियतनाम की बातें चोदने वाले

पब्लिक गॉडन में मुरभाते फूला की फिर म

दुबले होत रहत हो लेकिन

अपन कमरे की दीवारा का उखडता पलस्तर

दिललायी नहीं देता

अबाल मुखमरी को टाइम्स आफ इण्डिया के

जरिए जानत हो

दो चार आसू भी बहा लेते हो

फज के नाम पर

लेकिन उसके बाद ! — दिन दोपहरी में भी

शहर के सबसे ज्यादा

व्यस्त चौराहे पर स्थित होटल में बैठकर

अनुपस्थित अधर की गिकायत करते हो

बिलाफत करते हो

एक पल का भी तुम्हारा उत्साह

अपने गरेबा में नहीं भाकता

आराम की सास नहीं लेता

'जनता' को कमर-तोड गठरी की तरह

पीठ पर लाद रखा है और

बीबी के गम पहलू में सराबोर होते वक्त भी

उमने नहीं उतारते

खादी की सफेद भक्त पोशाक के बावजूद
लाल नकाब डाले रहने वाले तुम
कभी भूले भटके भी तो
अपनी खोई हुई शर्म नहीं गुहारते

तुम तुम
कुत्ते की नहीं !
हवा का रख देगवर टट्टी या सीधी
हाने वाली
हिंदी लेखक की दुम
तुम !

(पाच)

मैं उसे देखता हूँ—

धीता बहुत धातिर होता है ।
दवे पाव बढता हुआ
कय किस ओर से गिकार पर
भपट पडेगा
कोई नहीं जानता ।

मैं उसे देखता हूँ —

भारतीय प्रजातन्त्र का हूँ हूँ करता
भारवान, सोदवान मन्त्री
कब कौन सी बेलुकी बात
कहा बोल देगा—
कोई नहीं जानता ।

मैं उसे देखता हूँ—

साप कहा ? शैतान कहा ?
गज की मौत कहा ?
जहा नाम लो
बहा ।

मैं उस देखता हूँ—

बफ गलती है लेकिन नहीं गलती ।
जमीन हिलती है लेकिन नहीं हिलती
आखें बंद कर लेता हूँ लेकिन नहीं करता ।
एकएक मर जाता हूँ लेकिन नहीं मरता ।

मैं उसे देखता हूँ—

खूबसूरत स खूबसूरत जगल म आग
 लग सकती है
 अफीम खाकर सोयी हुई बीमारिया
 जग सकती है ।
 अभी अभी हसता हुआ मैं अभी अभी
 रो सकता हू ।
 जो जो नहीं होना चाहिए वह वह सब
 हो सकता हू

मैं उसे देखता हू—

(सात)

वह
बिस वक्त और कहा मेरे साथ हो जायगा ?
नहीं जानता । इतना तो तय है कि वह
ऐसा कोई मौका नहीं चूकता जो मेरे लिए
महरब रखता है ।

तेल गाने का जुलूस निकल रहा था और वह
मेरे साथ था ।
विद्यार्थियाँ और मजदूरा पर गोली चल रही थी और वह
मेरे साथ था ।

नक्सलवाडी और श्रीकाकुलम मे सरकारी ताकत को
मुह तोड़ जवाब दिया जा रहा था और वह
मेरे साथ था ।

अकाल के वक्त, बाढ़ के वक्त हडताल के वक्त
गज कि हर अहम मौके पर वह
मेरे साथ होता है ।
मैं उठने को होता हूँ कि वह अपने फौलादी पजे से ।
मेरी कलाई थाम लेता है

—कहा जा रह हो ? पहले जवाब दो । फिर जाना—
और मैं नुर्सी पर डेर हो जाता हूँ । वह
मेरी उन सारी कविताओं की चिंदिया बर

देता है, छितरा देता है, जिनमें
उसे एक भी चिन्तनी नजर आ जाती है। मैं

सिर्फ तमाशबीन होता हूँ। मूक। इन
सारी अनैतिहासिक दुःखटनाओं का।

(घाठ)

वह
रान था । घड़ेरा था । सतार्ये था । पैरा
की गूजती आवाज था । जब मैं
जेल म था । वह
मेरे साथ था । चारा और था । बल्लु
और मर बीच था ।

—'कहिए क्या हालचाल है ? आजकल
कविताएँ क्यों नहीं लिखत ?

और जब लिखने को होता तो कहता—'यहा भी !
बल्लु मे बात क्या नहीं करते ? वह
मामूली चोर कैदी है—इसलिए ।'

एक दिन तो हद् ही हो गयी । बल्लु बोला
—'तुमन ऐसा क्या किया—क्या लिखा पतलु—जो
यहा आया ?' मैं घबरा गया ।

मैंने देखा । मैंने पाया कि वह बल्लु का
चेहरा बन चुका है ।

(नी)

हत्या की कोशिश नाकाम नहीं होनी चाहिए। वह
उध गया तो दुगुना खूबार हो जायेगा। ता
जखरी था कि मैं हथियारो की जाच कर लेता। और
बारबाई के लिए मुतासिब हथियार चुन लेता। मैंने

अपने पास के हथियारों पर नजर डाली। कलम
और बखिताण। बस ये ही तो।
बनम तो उससे टकरायगी नहीं कि चूर चूर
हा जायगी। बखिताओ
को तो वह फाड़ फूडकर हवा में उड़ा देगा।
तब ?

और भरे घोड़े की हड्डियों की गति के लिए
टटोलता
मैं छटपटा रहा हूँ। बखिताओ में। और
मुनते और पढ़त लोगो की खुशी
मुझे कही नहीं छूती।

मैं उसकी गिरफ्त में हूँ। और वह
आखिरी जवाब माग रहा है। और मैंने
अभी पहली किस्त भी नहीं चुकायी। कि बखिता
में अब भी बराबर लिख रहा हूँ। लिखे जा रहे हूँ।

तो क्या वह सचमुच ही यह रहस्य उजागर
कर देगा कि नदी का बहाव नबली है कि दूब का
हरापन सिफ ऊपरी पत है कि बखित ?
एक अनिवाद्य हाजत में छुटकारा पान का
स्वाभाविक नतीजा है कि माहस की प्राणि की—

विद्रोह की चमड़ी तुरन्त पर प्रथम ही
 बुजदिनी, सुदगर्जी और टुन्दाई से मुलाकात
 होनी है। क्या यह
 बिनी या भी नहीं सोचने देगा कि मेरे बंद के
 बोन रह जान के पीछे मेरे घर की छत, दीवारा
 और दरवाजों की झञ्झी-भासी भूमिका रही है ?

एसी हागत मे भी जो होगा, जाता हू। यान में
 क्या करूंगा, यह तय है। समझौते की कहीं कोई
 गुजाइश नहीं। इन हाया को उसके खून से रगुना
 ही एकमात्र नियति है। अभिगप्त हू मैं
 बनने को। लेकिन अभी तो, इस पल ता
 मैं यह कविता लिख रहा हू। और यह
 निब बना हुआ है। अगले ही पल
 मुझ से वे ही जान पहचाने सबाल
 लेकिन

और लेकिन—और लेकिन

जितनी कविता अनिवाय और स्व
 मेरी जिदगी में
 उतना का उतना ही—यह चले
 रती भर

विद्रोह की चमड़ी खुरचने पर अक्सर ही
 बुजदिली, खुदगर्जी और टुच्छई से मुलाकात
 होती है। क्या वह
 किसी को भी नहीं सोचने देगा कि मेरे कद के
 बौने रह जाने के पीछे मेरे घर की छत, दीवारों
 और दरवाजों की अच्छी खासी भूमिका रही है ?

ऐसी हालत में भी जो होगा, जानता हूँ। याने मैं
 क्या करूँगा, यह तय है। समझते की वही कोई
 गुजाइश नहीं। इन हाथों को उसके खून से रगना
 ही एकमात्र नियति है। अभिशप्त हूँ मैं हत्यारा
 बनने को। लेकिन अभी तो, इस पल तो
 मैं यह कविता लिख रहा हूँ। और वह
 निव्व बनाव हुआ है। अगले ही पल
 मुझ से वे ही जाने-पहचाने सवाल पूछने वाला है।
 लेकिन

और लेकिन—और लेकिन

जितनी कविता अनिवाय और स्वाभाविक है
 मेरी जिंदगी में
 उतना का उतना ही—यह ब्लैकमेलर भी तो है
 रत्ती भर भी कम नहीं।

वैष्णु गोपाल

जन्म 22 अक्टूबर 1942 करीमनगर (आन्ध्रप्रदेश)
में।

प्रारम्भिक शिक्षा हैदराबाद में। फिर आवारानगियों,
यात्राओं और भटवाया में भरे लम्बे लम्बे अन्तरात।
जिनमें अयोध्या में रहकर वैष्णव सम्प्रदाय में दीक्षित
होना तथा मस्कृत अध्ययन करना जुड़ा। दा विषयों
में साहित्यरत्न। 1963 में हिन्दी साहित्य और
1966 में दर्शनशास्त्र में। 1968-71 के दौरान
औद्योगिक गांव कागज़नगर में अध्यापन। साथ ही
मानसवाद का अध्ययन। 1971 में कविता और
राजनीतिक गतिविधियों के कारण गिरफ्तारी।
वेरोजगारी। 1972 से 75 तक भोपाल में फ्री-
लॉसिंग। 1976, विदिशा में हिन्दी एम०ए०। आज-
कल केन्द्रीय विश्वविद्यालय, हैदराबाद में 'हिन्दी वाम
कविता का सौन्दर्यशास्त्र' विषय पर शोधरत्न।
1970 से नाटकों में रुचि। 1973, भोपाल में श्री
बी० वी कारत से अभिनय च निर्देशन का प्रशिक्षण
तथा उन्हीं के निर्देशन में 'रसगंधर्व' और 'पछी ऐमे
आते हैं' नाटकों में अभिनय। राजेंद्र गुप्त के निर्देशन
में भी दो नाटकों में अभिनय। कविताओं के अति-
रिक्त कुछ कहानियाँ और समीक्षा लेख प्रकाशित।
1972 में एक कविता संग्रह 'वे हाथ होते हैं
प्रकाशित।